

जुल्म ढाना- अत्याचार करना; जुल्म तोड़ना- अत्याचार करना।

जुल्मी वि. (अर.) अत्याचारी, कमजोर को सताने वाला, किसी का हक दबाने या मारने वाला।

जुल्माब पुं. (अर.) जुलाब प्रयो. जुल्माब लगाना- परेशान होना।

जुवती स्त्री. (तद्.) युवती।

जुवराज पुं. (तद्.) युवराज।

जुष्य वि. (तत्.) पूजनीय, पूज्य, सेन्य।

जुस्तजू स्त्री. (फा.) खोज, तलाश, गवेषणा।

जुहार स्त्री. (फा.) 1. अभिवादन, प्रणाम, सलाम 2. पुकार मुहा. जुहार लगाना- पुकारना।

जुहारना स.क्रि. (अर.) 1. प्रणाम करना, सलाम करना 2. बुलाना, पुकारना।

जुही स्त्री. (तद्.) एक प्रकार का पौधा जिस पर चमेली से मिलती-जुलती सुगंध वाले सफेद फूल लगते हैं।

जुहू पुं. (तत्.) 1. पलाश की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र 2. अग्नि की जिह्वा, अग्नि शिखा।

जुहूर पुं. (अर.) 1. प्रगट, जाहिर होने की स्थिति 2. नुमाइश 3. उत्पत्ति, पैदाइश, आविर्भाव, अवतार।

जुहूराण वि. (तत्.) 1. वक्रता या कुटिलता करने वाला 2. वक्र, कुटिल 3. टेढ़ी चाल चलने वाला।

जुह्वान पुं. (तत्.) 1. अग्नि 2. वृक्ष 3. कठोर हृदय वाला व्यक्ति।

जू स्त्री. (तद्.) बालों में पड़ने वाला एक कीड़ा जो स्वेदज (पसीने से उत्पन्न) होता है।

जूँठ स्त्री. (तद्.) जूँठ होने का भाव, जूँठ।

जूँठन स्त्री. (तद्.) जूँठन।

जू स्त्री. (तद्.) 1. सरस्वती 2. वातावरण 3. वायु 4. बैल या घोड़े के माथे का टीका।

जूआ पुं. (तद्.) जुआ।

जूजू पुं. (अनु.) एक कल्पित जीव जिसका प्रयोग बच्चों को डराने के लिए किया जाता है।

जूझ स्त्री. (तद्.) युद्ध, लड़ाई-झगड़ा।

जूझना अ.क्रि. (देश.) लड़ना, लड़कर वीरगति प्राप्त कर जाना।

जूट पुं. (तत्.) 1. जटा, जूड़ा 2. लट 3. शिव की जटाएँ पुं. (अं.) पटसन, पटसन से बना कपड़ा।

जूठन स्त्री. (देश.) 1. खाकर शेष छोड़ा हुआ पदार्थ 2. किसी का बचा हुआ भोजन 3. वह पदार्थ या वस्तु जिसका व्यवहार एक-दो बार कर लिया गया हो।

जूठा वि. (तद्.) वह पदार्थ जिसे किसी ने खाकर या मुँह लगाकर छोड़ दिया हो 2. जूठा अन्न, जूठी पत्तल 3. अपवित्र मुहा. जूठे हाथ से कुत्ता भी न मारना- बहुत कंजूस होना पुं. (तद्.) जूठन, उच्छिष्ट भोज्य पदार्थ।

जूड़ा पुं. (तद्.) 1. सिर के बालों को सिरे पर एकत्र करके बाँधने से बना हुआ केश विन्यास (गाँठ) 2. महिलाओं द्वारा अपने सिर के ऊपर बाल इकट्ठा करके बाँधने से बनी हुई गाँठ जैसी आकृति 2. चोटी, कलगी 3. बच्चों का एक रोग जिसमें अधिक सर्दी लगने से जोर-जोर से साँस चलती है।

जूड़ी स्त्री. (तद्.) एक प्रकार का ज्वर जिसमें रोगी को खूब जोर के ज्वर ताप के साथ सर्दी (ठंड) महसूस होती है जिससे उसके शरीर में कंपन-सा (कंपकंपी) होने लगता है।

जूता पुं. (तद्.) चमड़े, कपड़े या रबर आदि के बने हुए पादत्राण (पैरों में पहनने वाली वस्तु) मुहा. जूते उठाना- हीन से हीन सेवा और चापलूसी करना, खुशामद करना, दासता करना, जूता मारने के लिए तैयार हो जाना; जूते चाटना- खुशामद करना, चापलूसी करना; जूता मारना- मुँहतोड़ जवाब दे देना; जूतों में दाल बँटना- परस्पर इतना विरोध होना कि सारी सहयोगशीलता जाती रहे, भारी अनबन होना।